

मध्य प्रदेश में बौद्ध प्रतिमा कला - एक ऐतिहासिक अध्ययन

डा० स्मिता राशी

Date of Submission 15/02/25
Date of Acceptance 15/04/25
Date Publication 01/06/25

असि. प्रोफेसर, इतिहास, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश

rshis13@gmail.com 9340058462

शोध सारांश

छठीं शताब्दी ई.पू. में बौद्ध धर्म का अभ्युदय भारतीय समाज व संस्कृति में क्रांति का प्रथम शंखनाद था। जब देश कुत्सित परम्पराओं, घृणा, द्वेष, अशान्ति, उन्माद, हिंसा व वैमनस्यता के दौर से गुजर रहा था, तब ही पृथ्वी पर गौतम बुद्ध एक महामानव के रूप में अवतरित हुए थे। जिनकी विचार धारा ने भारतीय समाज में क्रांतिकारी परिवर्तनों का सूत्रपात किया। कर्मकाण्डीय ब्राह्मण धर्म के विरुद्ध प्रतिपादित बौद्ध धर्म विश्व-बंधुत्व व 'सर्वजन हिताय व सर्वजन सुखाय' की भावना उत्प्रेरित था। मध्यप्रदेश में बौद्ध धर्म पूर्ण वैभव के साथ पल्लवित हुआ जबकि गौतम बुद्ध स्वयं कभी मध्यप्रदेश में नहीं आए। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक बौद्ध धर्म उत्थान और पतन की सभी अवस्थाओं में लगातार संपूर्ण मध्य प्रदेश में विद्यमान रहा। महात्मा बुद्ध ने जिन सिद्धांतों एवं आदर्शों का प्रतिपादन किया आज के आधुनिक समय में भी अपनी मान्यता बनाए हुए हैं। बौद्ध धर्म को मध्य प्रदेश में राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ जिसके फलस्वरूप मध्यप्रदेश में विभिन्न वास्तु एवं मूर्तिकला निर्मित हुई और मध्य प्रदेश में बौद्ध धर्म जो कि मानवतावादी धर्म से प्रेरित था ने विशेष उन्नति की। मध्यप्रदेश में रायसेन जिले के सांची और सतना में भरहुत जैसे विशाल स्तूप का निर्माण हुआ यह ना केवल बौद्ध स्थलों में अपितु हिंदू धर्म स्थलों में भी स्थापित है। मंदसौर, रीवा, सतना, उज्जैन, रायसेन, विदिशा, ग्वालियर आदि से जिले हैं जो मध्य प्रदेश में बौद्ध केंद्र के रूप में उभर कर आए और राजकीय संरक्षण में विस्तृत हुए। बुद्ध के जीवन काल में ही मध्य प्रदेश में बौद्ध धर्म ने अपनी जड़े जमाना शुरू कर चुका था। बौद्ध धर्म का ज्ञान हमें मगधी, पाली, संस्कृत आदि भाषा में रचे गए साहित्यिक बौद्ध ग्रंथों जैसे विशेषतः विनयपिटक, संयुक्त निकाय, अग्नुरनिकाय, दीर्घनिकाय, थेरगाथा, दिव्या वदान महाबोधीवंश निकाय महावस्तु आदि से प्राप्त होते हैं जो कि बौद्ध धर्म का मध्य प्रदेश में उद्भव, प्रसार तथा पतन के बारे में पता चलता है साथ ही उत्तर बौद्धकालीन भिक्षु भिक्षुणियों के निवास स्थल, स्तूप, महाविहार आदि के बारे में सूचना प्राप्त होती है।

मुख्यशब्द : गांधार कला, प्रतिमाएं, बलुआ, ध्यान मुद्रा, कमलासन, मंजुश्री

1. प्रस्तावना : बौद्ध धर्म के प्रवर्तक तथागत गौतम बुद्ध स्वयं मूर्ति पूजा के विरोधी थे। तात्कालिक समय में मानव की प्रतीकात्मक प्रतिमाएं बनती थी किंतु बौद्ध धर्म के महायान शाखा के उदय के साथ ही प्रथम शताब्दी में उपासना भक्ति आदि तत्वों का समागम हुआ और गौतम पुत्र को एक देवता के रूप में देखा जाने लगा जिसके परिणामस्वरूप गौतम बुद्ध की विभिन्न मुद्राओं में मूर्तियों का निर्माण भी प्रारंभ हो गया। जिनमें मुख्यता गौतम बुद्ध या सिद्धार्थ वज्रपाणि, अवलोकितेश्वर, मंजूश्री की प्रतिमाओं का निर्माण गुप्त काल तक हो चुका था। बौद्ध धर्म की अन्य शाखा वज्रयान का छठी शताब्दी में उदय हुआ जिसमें बुद्ध को पंचध्यानी के रूप में कल्पित किया गया। बोधिसत्व के अलावा बौद्ध देवियों की भी प्रतिमाएं मध्य प्रदेश से प्राप्त हुई हैं जो कि तुलनात्मक रूप से कम हैं। प्रारंभ में प्रतीकात्मक होने के कारण बुद्ध से संबंधित वस्तुएं जैसे बोधिवृक्ष, दीक्षापात्र, धर्मचक्र आदि प्रमुख थे किंतु महायान शाखा के उदय के साथ मूर्तियों या प्रतीक पूजा के रूप में बुद्ध को देव मानकर प्रतिमा का निर्माण हुआ हुआ जो कि ब्राह्मण, जैन आदी समकालीन धर्मों का प्रभाव था। कुषाण काल में कनिष्क के समय हुई तृतीय बौद्ध संगति से बौद्ध धर्म को राजश्रय प्राप्त हुआ व शिल्पकारों ने बुद्ध मूर्तियों का निर्माण किया। मध्यप्रदेश में बुद्ध की प्रतिमाएं कुषाण काल से पूर्व मध्य काल तक मिलती हैं। कुषाण कालीन बुद्ध की प्रतिमाएं की मूर्तियां, सांची से गुप्तकालीन प्रतिमाएं, बाघ फोपनार, खंडवा, रायसेन, ग्वारीघाट, जबलपुर नचना, पन्ना, ग्वालियर, कायथा, उज्जैन, दंगवाडा आदि स्थानों से प्राप्त हुई जबकि गुप्तोत्तर काल में बुद्ध प्रतिमा भोजपुर, रायसेन, ग्यासपुर (विदिशा), सांची, ग्वालियर, खजुराहो, दतिया, दंगवाडा, उज्जैन आदि से प्राप्त हुई। पूर्व मध्यकालीन प्रतिमाएं बड़ागांव, रीवा, भरहुत सतना, सांची, तेवर जबलपुर, सतना इंदरगढ़, मंदसौर मानपुर, उमरिया शहडोल आदि स्थानों से प्राप्त हुई। भिक्षु-भिक्षुणियों के साथ-साथ बौद्ध देवियों की भी मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। बौद्ध धर्म की बनी हुई मूर्तियां गंधर्व और मथुरा शैली से प्रभावित हैं।

शोध कार्यप्रणाली

इस शोध कार्य में निम्न प्रकार की कार्य प्रणाली के उपयोग द्वारा शोध किया -

■ अन्वेषणात्मक - बौद्ध भिक्षु व बौद्ध धर्म के विद्वानों से साक्षात्कार के माध्यम से नये तथ्यों के अन्वेषण का प्रयास किया।

■ विश्लेषणात्मक एवं विवरणात्मक - उपलब्ध साक्ष्यों का विश्लेषण कर विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास।

■ वर्णनात्मक व तुलनात्मक - आवश्यकतानुसार घटनाओं व साक्ष्यों का वर्णन करते हुये विभिन्न धर्मों विशेषतः बौद्ध धर्म के साथ उसकी तुलना करने के लिये तुलनात्मक पद्धति को अपनाते हुये व्याख्या करने का प्रयास किया गया।

प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोतों के रूप में संस्कृत तथा पाली भाषा के ग्रंथ, स्तंभ, लेख, अभिलेख, विभिन्न अनुवादित ग्रंथ, शोधपत्र, शोधप्रबंध, चलचित्र, धारावाहिक, समाचार पत्र, पत्रिकाओं आदि के द्वारा तथ्य संकलन का कार्य किया।

2. उद्देश्य

- म.प्र. के सांस्कृतिक जीवन में अलग-अलग कालानुक्रम में विभिन्न विचारधाराओं, धर्मों, राजतंत्रों, परंपराओं का समावेश होता गया और भारत के हृदय प्रदेशों की संस्कृति विविधात्मक रूप में उभरकर सामने आई। भारत के विभिन्न धर्मों में बौद्ध धर्म व उसकी शिक्षा व दर्शन ने मुझे आकर्षित किया और अपने प्रदेश में बौद्ध धर्म के प्रभाव व तत्परिणाम स्वरूप होने वाले सांस्कृतिक परिवर्तन, को जानने व शोध के विषय के रूप में सामने लाने की प्रबल इच्छा ने मुझे इस शोध कार्य हेतु प्रेरित किया।
- शिल्प कला, साहित्य, प्राकृतिक सौंदर्य, विद्वानों, विचारकों शिक्षा धर्म, दर्शन व परम्परागत विविधताओं से संपन्न इस राज्य में बौद्ध धर्म का केन्द्र स्थापित होना गौरव की बात थी इसी के अध्ययन द्वारा मैं बौद्ध प्रतिमा कला का बारीकी के साथ उनकी बनावट, उपयोग की गई सामग्री, पत्थरों, उत्कीर्ण मुद्राओं और वस्त्रों द्वारा तुलनात्मक अध्ययन करना भी उद्देश्य है।
- अध्येताओं के लिये सामग्री उपलब्ध कराना मेरे शोध का उद्देश्य था।
- अलग 2 कालखंडों में तात्कालिक मान्यतानुसार बोधिसत्त्वों, बौद्ध देवियों का मूर्ति में उत्कीर्णन अन्य वास्तुकला के नमूने जैसे स्तूप, मठ, स्तंभ और मंदिरों का अध्ययन भी समहित हो जाता है अनायास।

जब कलाकार प्रकृति देवी यक्षी या जनन का प्रतीक दिव्य सुंदरी, सुरा-सुंदरी की परिकल्पना करता है तो उसकी भाँहें धनुष की चाप, आंखें वक्र मछली, होंठ कमल की पंखुड़ी, बाँहें रमणीय लता और पैर हाथी की सूँड़ या केले के वृक्ष की भाँति शुण्डाकार बनाता है। कलाकार की निष्ठा जिसे वह स्वप्न में वास्तविकता अथवा काव्यमय रूपक मानता है, के प्रति हैं। इस निरूपण, आदर्श प्रतिबिंब को वह पूरी सच्चाई के साथ जनन के विभिन्न देवी-देवताओं व भरहुत के रेलिंग स्तंभों पर दर्शाए गए अन्य दृश्यों के बीच प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। चुलकोक देवता की आकृति शृंग कला का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है जो इसकी देशज विशेषता और लोक स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है। हाथी पर मनोहर तरीके से खड़ी उसकी बाँहें और एक पैर पुष्पण वृक्ष का इस प्रकार आलिंगन कर रहे हैं मानो वह कोई वृक्ष देवी हो। भारी अलंकरण, अंतरीय व शिरोवस्त्र पहनने का तरीका, सभी उस काल की स्त्रियों के भूषाचार की ओर संकेत करते हैं। आकृति में एक लावण्य है जो भावी कुषाण आकृतियों में प्राचुर्य में दिखता है। इसकी दाहिनी ओर नामपत्र पर यक्षी के नाम उत्कीर्ण हैं और यह भी लिखा है कि यह स्तंभ आर्य पंथक की भेंट थी। अनेक रोचक जातक कथाएँ हैं और भरहुत इन पौराणिक कथाओं का खजाना है जिन्हें यहां दर्शाया गया है। इस गोलाकार फलक में अनंत पिंडिक द्वारा जेतवन उद्यान की जमीन को इस व्यापारी राजकुमार द्वारा भेंट दिए जाने से पहले स्वर्ण मुद्राओं से ढकने की कथा दर्शाई गई है।

सांची स्तूप के पूर्वी प्रवेशद्वार के एक हिस्से में बने एक आले में एक दृश्य में एक वृक्षिका या काष्ठ परी को दर्शाया गया है। यहां हम देख सकते हैं कि मूर्तिकार ने काफी प्रगति की है क्योंकि तीसरी-दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में मूर्तिकार ने, हालांकि दुर्नम्य, लेकिन मानवाकृति का अग्रभाग बनाने का प्रयास किया है। मूर्तिकार आकृति को वृक्ष देवी के रूप में पेड़ की डालों से लटकते हुए दर्शाने में सफल रहा है। वृक्ष देवी की आकृति की नग्नता यह दर्शाती है कि वह प्रजननशक्ति की देवी है। त्रिभंग मुद्रा विकसित कर कलाकार ने आकृति को त्रिविम प्रभाव दिया है, यानि लंबाई चौड़ाई और गहराई, ताकि स्त्री आकृति की रूपरेखा और सौंदर्य उभर कर आए।



तोरण द्वार साँची स्तूप, जिला-रायसेन

मौर्यकाल तक बौद्धों में हीनयान ही प्रचलित था तथा बुद्ध की मूर्तियों का प्रादुर्भाव नहीं हुआ था। इसलिए अशोक ने स्तंभशीर्ष पर बौद्ध धर्म के प्रतीकों सिंह, वृषभ, हरित, अश्व, चक्र आदि का उत्कीर्णन किया। प्रारंभिक कला में प्रतिकात्मक होने के कारण बुद्ध से संबंधित वस्तुएं जैसे बोधिवृक्ष, दीक्षापात्र, धर्मचक्र आदि प्रमुख और मूर्तियों काचलन नहीं के समान था किंतु महायान शाखा के उदय के साथ मूर्तियों या प्रतीक पूजा के रूप में बुद्ध को देव मानकर प्रतिमा का निर्माण हुआ जो कि ब्राह्मण, जैन आदी समकालीन धर्मों का प्रभाव था। अगर मध्य प्रदेश में प्रतिमाओं की बात करें तो मध्य प्रदेश से प्राप्त बुद्ध की मूर्तियां 3 प्रकार की हैं-

- 1 स्थानक प्रतिमाएं
- 2 आसन प्रतिमाएं
- 3 महापरिनिर्वाण प्रतिमाएं

स्थानक प्रतिमाएँ कुषाण काल में सांची से प्राप्त हुई बुद्ध की लाल बलुआ पत्थर से निर्मित प्रतिमा है यह सांची से प्राप्त हुई। इसके अलावा बाघ धमनार मंदसौर, खंडवा से भी प्राप्त हुई। इसमें बुद्ध के छोटे पैर दृष्टिगत होते हैं। कुछ अन्य 7 वीं शती ईस्वी की एक प्रतिमा जोरस की संग्रहालय में संग्रहित है, 165 सेंटीमीटर ऊंची है। इसमें संघाटी सादी तथा पारदर्शी सलवटो युक्त है। अभंग मुद्रा की इस प्रतिमा में बाल परंपरागत शैली में उत्कीर्ण है। आठवीं सदी की बुद्ध की एक प्रतिमा सिर विहीन है जो सांची संग्रहालय में संग्रहित है इसमें सिर के पीछे कमल की पंखुडियों से अलंकृत किंतु खंडित प्रभामंडल है, बाघ(धार) में गुफा क्रमांक 2 में एक बुद्ध प्रतिमा 10 फीट 4 इंच ऊंची है। बुद्ध की दूसरी प्रतिमा 9 फीट 6 इंच ऊंची है ,इन दोनों प्रतिमाओं में पतला प्लास्टर किया गया है। बुद्ध का दायाँ हाथ वरद मुद्रा में है। धमनार में फोपनार, खंडवा में इस प्रकार की अभय मुद्रा में कुछ प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। फोपनार में बुद्ध की कांस प्रतिमाएं भी प्राप्त हुई हैं।

बुद्ध की आसन प्रतिमाएं तीन प्रकार की प्राप्त हुई है -

- 1 ध्यान मुद्रा
- 2 भूमि स्पर्श मुद्रा
- 3 धर्म चक्र प्रवर्तन मुद्रा

सांची ग्यासपुर, धमनार, बाघ से तीन प्रकार की मूर्ति प्राप्त हुई। सांची में स्तूप क्रमांक 1 की वेदिका के अंदर ध्यान मुद्रा में आसन प्रतिमाएं स्थापित है, इन प्रतिमाओं में बुद्ध के सिर के पीछे एक अलंकृत प्रभामंडल है और यह प्रारंभिक गुप्त काल की कृतियां मानी गई है।



बुद्ध, साँची स्तूप, जिला-रायसेन

सांची संग्रहालय में भी ध्यान मुद्रा की प्रतिमा ध्यान मुद्रा में बैठे हुए बट की प्रतिमा 18 मीटर की मूर्ति प्राप्त है। इस प्रतिमा में बाल परंपरागत शैली में उत्कीर्ण है। आठवीं सदी की बुद्ध की एक प्रतिमा सिर विहीन है जो सांची संग्रहालय में संग्रहित है इसमें सिर के पीछे कमल की पंखुडियों से अलंकृत है।

ग्यारसपुर, विदिशा के स्तूपों में ध्यान मुद्रा वाले बुद्ध की घुंघराले बालों युक्त सुंदर वस्त्र कमलासन पर स्थिर है, जिनके पास पीठ पर चक्र व हिरण का अंकन है। बुद्ध की भूमि स्पर्श मुद्रा प्रतिमाओं में पद्म आसन पर बैठे हुए दाएं हाथ से भूमि का स्पर्श करते हुए प्रदर्शित किया गया है। यह मुद्रा बुद्ध को काम मुक्त दर्शाती है। ऐसी प्रतिमाएं खजुराहो, भरहुत, सांची मड़ाई, तेवर, बिलहरी धमनार से प्राप्त हुई हैं। सांची के मंदिर क्रमांक 45 के गर्भ मह में 8 फीट 2 इंच ऊंची विशालकाय बुद्ध की प्रतिमा भूमि स्पर्श मुद्रा में प्राप्त हुई है जिस पर संघाटी बुद्ध के कंधे पर से है जिसका एक छोर बाएं कंधे के नीचे से लटकता प्रदर्शित है। खजुराहो संग्रहालय में कमलासन पर बैठे बुद्ध की भूमि स्पर्श मुद्रा में मूर्ति प्राप्त हुई इसमें बुद्ध का चेहरा अंडाकार घुंघराले केश, मांसल भुजाएं, लंबी बाहें, गले में गाड़ियों का प्रदर्शन मुख्य विशेषताएं हैं जो कि खजुराहो की उन्नत कला से प्रेरित लगती है। भरहुत सतना से भी भूमि स्पर्श बुद्ध प्रतिमा प्राप्त हुई है। बिल्हारी, जबलपुर से प्राप्त प्रतिमा 11वीं शती की है।

बुद्ध की धर्म चक्र प्रवर्तन मुद्रा की प्रतिमाएं जो कि सारनाथ उनके द्वारा दिए गए प्रथम उपदेश को प्रदर्शित करती हैं इसमें बुद्ध पद्मासन अवस्था में बैठे हुए बाएं हाथ की उंगलियों के ऊपर दाएं हाथ की उंगलियों को इस प्रकार रखते हैं जैसे मानव चक्र घुमा रहे हैं। बुद्ध की धर्म चक्र प्रवर्तन मुद्रा मुख्यतः ग्वालियर, दतिया, शहडोल, मंदसौर, पन्ना, सांची, रायसेन, ग्यारसपुर, विदिशा, बाघ धार आदि से प्राप्त हुई जिनमें से कुछ खंडित है और उनमें दोनों तरफ का भी अंकन है। यह प्रतिमाएं सांची में बलुआ पत्थर से निर्मित है जिसमें कि बुद्ध का चेहरा गोलाकार व गहरे ध्यान मिला है। ग्यारसपुर विदिशा में ध्यानी बुद्ध अमिताभ की प्रतिकृति हैं, धमनार मंदसौर में, बाघ धार की गुफा में धर्मचक्र तथा 2 मृत स्पष्ट दिखाई देते हैं। कलचुरी कालीन बुद्ध की धर्म चक्र प्रवर्तन मुद्रा में प्रतिमा राजेंद्र क्लब शहर शहडोल में संग्रहित है। बुद्ध की महापरिनिर्वाण प्रतिमा जो कि 15 फीट लंबी है मात्र धमनार मंदसौर से प्रतिवेदन है जो कि छोटा बाजार नामक बौद्ध गुफा में पूर्वी दीवार में प्राप्त है। इसमें बुद्ध करवट लेकर चिर शांति में लेटे हुए हैं इसका पत्थर खुरदुरा है जिसमें शिल्प की बारीकियां स्पष्टता नहीं नजर आती।

मध्य प्रदेश में बौद्ध के अलावा उनके अवतार या भविष्य में जन्म लेने वाले बुद्ध की भी मूर्तियां बुद्ध की मूर्तियां प्राप्त हुई है जिनमें मुख्यतः मैत्रेय मैत्री बोधिसत्व, अवलोकितेश्वर की मूर्तियां हैं। अवलोकितेश्वर अवलोकितेश्वर के कई रूपों में मूर्तियां प्राप्त हुई है जिनमें खसर्पण लोकनाथ, हरिहर, हलाहल आदि हैं। अवलोकितेश्वर रीवा के गुर्गी और रामबन, सतना के तुलसी संग्रहालय में है।



अवलोकितेश्वर, रामबन सतना

बोधिसत्व में मैत्री जिनका जन्म बुद्ध के महापरिनिर्वाण के 4000 वर्ष बाद होगा की मूल की प्रतिमाओं का प्रारंभ कुषाण काल से ही हो गया था जिनमें मुख्य विशेषता प्रतिमाओं की एक मुखी, द्विमुखी, त्रिमुखी एवं चतुर्मुखी होना है। मूर्तिकला में इन्हें अधिकतर जटा मुकुट धारण किए दिखाया जाता है इनका मध्य प्रदेश में सर्वप्रथम साक्ष्य सांची में स्तूप क्रमांक 12 के मलबे से प्राप्त हुआ उनके पैरों में सैंडल भी प्रदर्शित है जो उनका राजवर्ग के पुरुष होना दर्शाता है।

बोधिसत्व अवलोकितेश्वर सबसे अधिक लोकप्रिय हैं बुद्ध के अतिरिक्त सर्वाधिक इन्हीं की प्रतिमाएं निर्मित हुई है जो कई रूपों में है। यह मुख्यतः खजुराहो, बिलहरी, छतरपुर जिला व सांची संग्रहालय में प्राप्त है। मंदसौर के इंदरगढ़ से ध्यानी बुद्ध, अमिताभ, अवलोकितेश्वर का की प्रतिमा प्राप्त हुई है सतना से बाबूपुर, जिला रीवा से मुर्गी बोधिसत्त्व पद्मापाणी की 10 वीं 11 वीं सदी की प्रतिमा बघेला म्यूजियम में प्रदर्शित है। इस प्रतिमा में बोधिसत्व पर अवलंबित दोहरे कमलासन पर बैठे हुए हैं जो कि मुकुट सहित सर्व आभूषणों से अलंकृत हैं। अवलोकितेश्वर की एकमात्र कांस्य प्रतिमा धुबेला संग्रहालय में है। वन्य प्राणी जो कि बोधिसत्व में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं गुप्त काल में सांची में स्तूप क्रमांक 1 के पास उनका स्तंभ स्थापित किया गया है जो कि हाथ में चीवर पकड़े हुए।

वज्रयान की शाखा के साथ बुद्ध की शक्तियों की अवधारणा आई। इन विभिन्न देवियों जिनमें मुख्य थीं एक जटा तारा, तारों ,भव कुरुकुल्ला इत्यादि। जबलपुर के भेड़ाघाट के 64 योगिनी मंदिर परिसर से एक तारा मूर्ति प्राप्त हुई है। तिलवारा घाट, जबलपुर से भी एक मूर्ति प्राप्त हुई है ये प्रतिमाएं दोहरे कमलासन पर ललिता संग मुद्रा में बैठी हुई है। साधनामाला के अनुसार चुन्नी देवी सर्व भूतों से अलंकृत शरतचंद्र के समान वर्ण वाली चतुर्भुजी होती है। अपराजिता देवी ध्यानी बुध रत्न संभव से उत्पन्न कहीं गई हैं जिनका स्वभाव उग्र होता है वह दुष्टों का नष्ट करने वाली है। देवी जी जिनको अष्टभुजी पीत वर्ण चतुर्भुजी हाथों में घंटा लिए हैं साथ ही काली प्रतिमाओं में देवियों को बाल को या पुत्रों के साथ प्रदर्शित किया है जो कि घुटनों के संग अथवा स्तनपान करते हुए दिखाए गए।



पवैया, ग्वालियर

बोधिसत्त्व में मैत्री जिनका जन्म बुद्ध के महापरिनिर्वाण के 4000 वर्ष बाद होगा की मूल की प्रतिमाओं का प्रारंभ कुषाण काल से ही हो गया था जिनमें मुख्य विशेषता प्रतिमाओं की एक मुखी, द्विमुखी, त्रिमुखी एवं चतुर्मुखी होना है। मूर्तिकला में इन्हें अधिकतर जटा मुकुट धारण किए दिखाया जाता है इनका मध्य प्रदेश में सर्वप्रथम साक्ष्य सांची में स्तूप क्रमांक 12 के मलबे से प्राप्त हुआ उनके पैरों में सैंडल भी प्रदर्शित है जो उनका राजवर्ग के पुरुष होना दर्शाता है।

बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर सबसे अधिक लोकप्रिय हैं बुद्ध के अतिरिक्त सर्वाधिक इन्हीं की प्रतिमाएं निर्मित हुई हैं जो कई रूपों में हैं। यह मुख्यतः खजुराहो, बिलहरी, छतरपुर जिला व सांची संग्रहालय में प्राप्त है। मंदसौर के इंदरगढ़ से ध्यानी बुद्ध, अमिताभ, अवलोकितेश्वर का की प्रतिमा प्राप्त हुई है सतना से बाबूपुर, जिला रीवा से मुर्गी बोधिसत्त्व पद्मापाणी की 10 वीं 11 वीं सदी की प्रतिमा बघेला म्यूजियम में प्रदर्शित है। इस प्रतिमा में बोधिसत्त्व पर अवलंबित दोहरे कमलासन पर बैठे हुए हैं जो कि मुकुट सहित सर्व आभूषणों से अलंकृत हैं। अवलोकितेश्वर की एकमात्र कांस्य प्रतिमा धुबेला संग्रहालय में है। वन्य प्राणी जो कि बोधिसत्त्व में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं गुप्त काल में सांची में स्तूप क्रमांक 1 के पास उनका स्तंभ स्थापित किया गया है जो कि हाथ में चीवर पकड़े हुए।

वज्रयान की शाखा के साथ बुद्ध की शक्तियों की अवधारणा आई। इन विभिन्न देवियों जिनमें मुख्य थीं एक जटा तारा, तारों, भव कुरुकुल्ला इत्यादि। जबलपुर के भेड़ाघाट के 64 योगिनी मंदिर परिसर से एक तारा मूर्ति प्राप्त हुई है। तिलवारा घाट, जबलपुर से भी एक मूर्ति प्राप्त हुई है ये प्रतिमाएं दोहरे कमलासन पर ललिता संग मुद्रा में बैठी हुई है। साधनामाला के अनुसार चुन्नी देवी सर्व भूतों से अलंकृत शरतचंद्र के समान वर्ण वाली चतुर्भुजी होती है। अपराजिता देवी ध्यानी बुद्ध रत्न संभव से उत्पन्न कहीं गई हैं जिनका स्वभाव उग्र होता है वह दुष्टों का नष्ट करने वाली है। देवी जी जिनको अष्टभुजी पीत वर्ण चतुर्भुजी हाथों में घंटा लिए हैं साथ ही काली प्रतिमाओं में देवियों को बाल को या पुत्रों के साथ प्रदर्शित किया है जो कि घुटनों के संग अथवा स्तनपान करते हुए दिखाए गए।

3. निष्कर्ष

मध्यप्रदेश में बौद्ध काल की मूर्तियां की शैली मथुरा व गांधार शैली से प्रभावित थी जिसमें मध्य प्रदेश की तात्कालिक शैली का समावेश किया गया जो इन मूर्तियों में प्रदर्शित होता है। शारीरिक बनावट गांधार शैली की तरह है, जिसमें शारीरिक सौष्ठव प्रधान है वहीं मथुरा शैली से बलुआ लाल पत्थरों का उपयोग किया गया। इस प्रकार मध्य प्रदेश में बौद्ध मूर्तिकला के उदाहरण मौर्य काल से पूर्व मध्य काल तक मिले हैं जोकि समय के साथ उनके शिल्प में आकार में कला परंपरा व शैली में विकास के साथ-साथ बदलाव हुए एवं नई प्रवृत्तियों व मान्यताओं का प्रवर्तन हुआ वह उनकी मूर्तियों में भी दृष्टिगत होता है। अइस शोध से म.प्र. की समृद्ध संस्कृति के एक कारक अर्थात् बौद्ध धर्म का उपस्थि होगा यहां के समाज, मूर्ति कला, शिल्प, साहित्य तथा विदेशों से संबंध को एक नया आयाम दिया। धार्मिक बदलाव आंदोलन के रूप में इस धर्म ने कालान्तर में भारतीय दर्शन को सुदृढ़ करने के साथ कला व स्थापत्य पर भी गहरा प्रभाव डालने में सफल हुए हैं। अध्येताओं के लिये म.प्र. के अलावा अन्य राज्यों में जहां बौद्ध धर्म का अस्तित्व है या समाप्त हो चुका है उन्हें अध्ययन व शोध की प्रेरणा मिलेगी।

4. संदर्भ

- 1.. जातक कथा, (1995), अनुवादक भदन्त आनन्द कौसल्यायन, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
2. विनय पिटक, अनुवादक राहुल सांकृत्यायन, बौद्ध आकर ग्रंथमाला, काशी विद्यापीठ, वाराणसी
3. विषाखदत्त, मुद्राराक्षस, (1944), संपादक अल्फ्रेड हिल ब्रांट ब्रेस्लम, 1912 अनुवादक रंजीत सीताराम पंडित, बम्बई
4. समरांगण सूत्रधार, (1924), गायकवाड़ ओरियंटल सिरीज, बड़ौदा
5. अग्रवाल, कन्हैयालाल, (1987), विन्ध्य क्षेत्र का ऐतिहासिक भूगोल, सुषमा प्रेस
6. उपाध्याय, भरत सिंह, (1991), बुद्धकालीन भारतीय भूगोल, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
7. उपाध्याय, वासुदेव, प्राचीन भारतीय स्तूप गुहा एवं मन्दिर, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना
8. उपाध्याय, वासुदेव, (1982), प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी
9. कनिष्क, अलेक्जेंडर, (1975), भरहुत स्तूप (हिन्दी अनुवादक तुलसी राम शर्मा), भारतीय पब्लिशिंग हाउस, वाराणसी
10. लाल, बी०सी०, 1973, ज्याग्राफी आफ अर्ली बुद्धिज्म, वाराणसी
11. कवल, रामलाल, 1984, प्राचीन मालवा में मंदिर वास्तुकला
12. मार्शल एवं फीषर, मोनुमेंट्स आफ सांची
13. उपाध्याय, वासुदेव, 1989, प्राचीन भारतीय स्तूप गुहा एवं मंदिर, द्वि.स. पटना
14. शर्मा, राजकुमार, मध्यप्रदेश के पुरातत्व का संदर्भ
15. शुक्ल, द्विजेन्द्र नाथ, 1968, भारतीय स्थापत्य, लखनऊ,